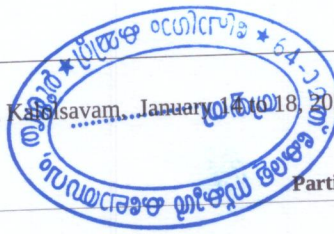




हारना मेरे लिए मंजूर नहीं

"माँ, मुझे न बड़े होने पर एक पेंलट बनना है।" रोहन ने अपना सपना उसके माँ से कहा। दस साल का रोहन की सपना सुनकर माँ हैशान और खुश हुआ। साथ ही रोहन ने कहा की "मुझे बहुत इच्छा है की मैं एक पेंलट बनू लेकिन मुझे डर लगता है।" "डर? क्यों बेरा?" माँ ने रोहन से पूछा। रोहन को अपने आप पर ही शक था की क्या वह ये कर पाएगा। रोहन अपनी पठार्ई से बहुत पीछे था तो उसे लगता है की वह अपना सपना पूरा नहीं कर सकता है। साथ ही रोहन बहुत शमीला भी था। उसे लोगो से बात करने में दिक्कत होती थी।

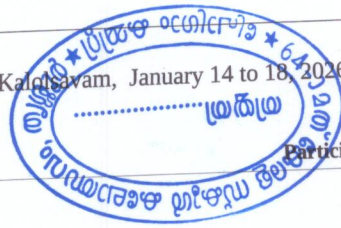
माँ ने उसे उमीद दिया की तुम तुम्हारे लक्ष्य तक पहुच जाओगे। "बेरा रोहन तुम ये कर सकते हो तुम्हारी अंतर उसकी काबीलियत है। तुम तुम्हारे डर को दूर द्रोगे। मुझे तुम पर थकीन है।" माँ की बातें रोहन को थोडा आत्मविश्वास दिया।



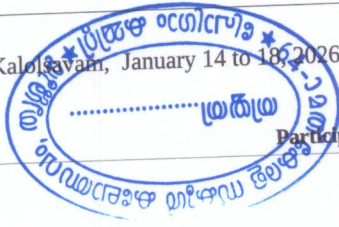
स्कूल में भी रोहन सब चीजों से दूर भागता था। उसका कोई खास दोस्त भी नहीं था स्कूल में। रोहन किसी को भी पसंद नहीं आता था। क्योंकि वह बहुत शमीला था और डरपोक भी। कोई उसे दोस्त बनाना नहीं चाहता था। यह सब बातें रोहन को और भी दुखी करता था। इस वजह से रोहन अपनी अंतर की आत्मविश्वास जो बचा है वह भी खो देता है।

हर दिन स्कूल से आते समय रोहन उदास रहता है। रोहन की हर उसे हर दिन कोई न कोई दुख देता रहता है। "क्या हुआ रोहन क्यों उदास हो?" माँ ने पूछा। आज भी हर दिन की तरह उसने अपनी दुख चुपाकर बोला। "कुछ भी तो नहीं।" रोहन को अब यह आदत च हो गई थी। रोहन की इस बरताव से माँ बहुत परेशान थी। वह अपनी पूरी कोशिश करती थी रोहन को संझाने की लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

शानो बीढ़ गया अब वह समय आ गया है। रोहन अब बड़ा हो गया फिर भी



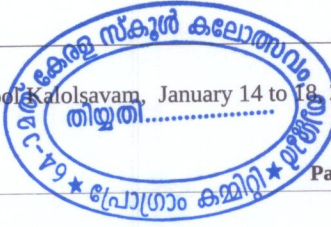
उसके कोई बदलाव नहीं आया। रोहन अपने जिदगी की पहले कदम रखनेवाला है। अब रोहन ही अपनी जिदगी तय करनेवाला है। आज वह उन्नीस साल का है। बचपन में उसका पेंलट बनने का सपना अभी भी उसके मन में दबा पड़ा है। अभी भी उसका डर उस सपने को झुक के रहा है। थहा तक रोहन अपनी माँ की वजह से ही पटुचा है। दो साल पहले बीमारी के कारण उसके पीता ही चला गया। रोहन की अकेले रोहन की देखभाल कर रहा है। पर कब तक? उन्नीस साल रोहन को संभालने की कोशिश की फिर भी उसका डर कम नहीं हुआ। माँ को रोहन के बारे में बहुत चिंता होती है। की वह नहीं है तो रोहन अकेले क्या करेगा। रोहन को सजबूरी से माँ ने पेंलट बनने के लिए पढाई करने के लिए भेजा। रोहन भी पेंलट बनना चाहता है पर उसे डर लगता है। आज से रोहन को अकेला पढना पड़ा क्योंकि रोहन की माँ अकेला ही थी रोहन के फीस भरने के लिए जो वह अकेले नहीं



कर सकती। रोहन को पढ़ने के लिए मजबूर हो
गया अपने माँ के लिए ताकी वह इतना कम
फीस भर सकू। रोहन दिन-रात भर पढ़ने
लगा। वह अपना पूरा मन लगाकर पूरी महत्ता
से पढ़ाई की। उसका महत्ता का फल धीरे-धीरे
उसकी रिसल्ट से दिखाई देने लगा। यह सब
देखकर माँ भी बहुत खुश था।

"माँ देखो फिर से मेरा पूरा
अच्छे नंबर आये हैं।" रोहन की बातों से उसकी
खुशी प्रकट था। "मैं तुम्हारे लिए बहुत
खुश हूँ बेटा। मुझे पता था की तुम सब
कुछ हासिल कर लोगे। अब तुम्हें तुम्हारी
खुबीयाँ पता चल रहा है न।" माँ के लिए
रोहन का प्यार उसकी अंतर की खुबीयाँ बाहर
लाई।

ऐसे ही वह अपने अंतर के डर
को धीरे-धीरे मिटा रहा था। फिर भी
लोगों को सामना करने का उसका डर
अभी भी नहीं गया। उससे कोई दोस्ती
करने के लिए आया तो भी रोहन डर से



उन सबसे दूर आगता है। हर दिन वापस आते समय रोहन से माँ पूछता था की तुम्हें कोई दोस्त मिला ? हर दिन का उसका जवाब एक ही था नहीं।

सब कुछ हर दिन की तरह चल रहा था। लेकिन एक दिन जब रोहन कोलेज जाकर वापस आया तो रोहन की माँ घर पर नहीं था। माँ काम पर जाकर वापस आने के बाद ही रोहन घर आता था। "माँ, माँ, तुम कहा हो?" रोहन ने चिल्लाया। तभी पड़ोस का एक 0थक्ती आया और रोहन से बोला की "माँ को अस्पताल ले गया"। रोहन की माँ घर से बेहोश पड़ा था यह देखकर लोगों ने उन्हें अस्पताल ले गया। सारा बात बताने के बाद पड़ोसी जल्दी ही चला गया क्योंकि रोहन वापस कोई जवाब का उमीद उन्हें नहीं था।

अस्पताल गया तो डाक्टर ने रोहन से बताया की "माँ को आराम की जरूरत है। उन्हें काम पर मत भेजो वरना उनकी बीमारी



बढ़ जायगी।" यह सब सुनने के बाद रोहन ने फैसला लिया की वह माँ को काम पर नहीं छोड़ेगा। लेकिन ऐसा किया तो उसे काम पर जाना पड़ेगा। लेकिन अपने माँ के लिए वह ये करने के लिए तैयार था। रोहन माँ के पास जाकर बैठा। वह नींद में थी। रोहन उन्हें परेशान किए बिना दूरे बोला "माँ कल से मैं आप को काम पर नहीं छोड़ूंगा। मैं आप के लिए कुछ भी करूंगा। आज से मैं डरपोक नहीं रहूंगा। सब लोगों से बातें करूंगा। सब मुशकिल का सामना करके अपना सपना सफल करूंगा।" माँ यह सब सुन रहा था। उनके आँखों से आँसू बहने लगा। रोहन उनके आँसू पोछ दिया और दबाया।

रोहन की हालत उसे निडर बनने की ताकत दी और माँ की प्यार भी। अगले दिन से रोहन पढ़ाई के साथ साथ खाना पकाई का काम भी शुरू किया। दिन में रोहन पढ़ाई करता था और रात को काम



केलिए जाता था। एक दिन रात को गाड़ी चलाते समय वह सो गया था और पेड़ पे जाकर टक्कर मारी साथी ही उसका एक पैर टूट गया। कल उसका सबसे जरूरी पेंलट परिक्षा था और अपने सपने तक पहुंचने की आखरी खतम था।

"हैं भगवान मेरे साथ ही ऐसे क्या होता है। मेने कितने मुशकिलो का सामना करके यहां तक पहुंचा था। आज मेरा सारा मेहनत पानी से मिल गया। मेरा सपना यहां खतम हो गया। अब माँ के सामने मैं कैसे जाऊंगा। बेचारी उनको पता तक नहीं है। वह मेरी इन्दजार कर रही होगी। अब मेरे जीवन में मुझे करने के लिए कुछ बाकी नहीं है। अब क्या जीना। मेरे से किसी को भी कोई फायदा नहीं है।" यह सब सोच-सोच के वह नींद में डूब गया। उस समय एक सपने जैसा उसके मन अपनी बचपन से आज तक की बातें आया। कल तक वह कैसा था। उसके जीवन में क्या-क्या बदलाव



आया। उसकी माँ की बातें। जो प्रतीक्षा वह
रोहन से श्रवती है। उनकी उमीद, सपने, प्यार।
रोहन का सपना उसकी, खुशी, दायित्व सब
कुछ उसके मन से आया। इन सब सौच से
अचानक वह बाहर निकला और फैसला किया
की मैं हार नहीं मानूंगा। हर मुश्किल का
सामना मैं करूंगा। किसी से भी नहीं डरूंगा।
कुछ भी मुझे नहीं रोक सकता। सब चीजों
को हराने की ताकत उसके अंतर आ गई थी।
कल का परिष्ठा उसने लिखने की
फैसला लिया। उसकी डर सब पूरी तरह से
मिट गया था। उसने अपनी कुछ नए दोस्तों
की मदद लेकर परिष्ठा लिखा। जब रिस्लट
आया तो सबसे पहला नंबर रोहन का था।
इस समय उसका मन खुशी से ~~च~~ माच रहा
था। "माँ यह सुनकर बहुत खुश हो जाएगी।
कल मेने मरना चाहा आज मैं जीना चाहता
हूँ। आज मुझे पता चला की हारना मेरे
लिए मंजूर नहीं।"